



कथकली (केरल)



# कथकली (केरल)

## कथकली के स्रोत

- ❖ **रामानट्टम:** रामायण की घटनाओं का प्रस्तुतीकरण।
- ❖ **कृष्णानट्टम:** महाभारत की घटनाओं का प्रस्तुतीकरण।
- ❖ नृत्य, संगीत तथा नाटक का संयोजन।
- ❖ आमतौर पर कथकली पुरुषों तथा युवा बालकों, जो पुरुष तथा स्त्री दोनों की भूमिका निभा सकते हों, द्वारा किया जाने वाला प्रदर्शन है। महिलाएँ इसमें भाग नहीं लेती हैं।
- ❖ **कथकली गीतों की भाषा:** मणिप्रवलम (मलयालम और संस्कृत का मिश्रण)
- ❖ इसे 'पूर्व का गाथागीत' भी कहा जाता है।
- ❖ आँखों और भौहों की लय के माध्यम से रस के निरूपण में उल्लेखनीय।
- ❖ **नवरस:** चेहरे के नौ महत्त्वपूर्ण भाव।
- ❖ नर्तक राजाओं, देवताओं तथा राक्षसों इत्यादि की भूमिका का निरूपण करते हैं।
- ❖ अच्छाई और बुराई के बीच शाश्वत संघर्ष का भव्य निरूपण।
- ❖ वर्ष 1930 में प्रसिद्ध मलयाली कवि वी.एन.मेनन द्वारा मुकुंद राजा के संरक्षण में इसका पुनरुत्थान किया गया।



- ❖ चेहरे का सुपरिष्कृत शृंगार
- ❖ अलंकृत मुखौटे
- ❖ बड़ा घेरदार घाघरा (स्कर्ट)
- ❖ बड़ी टोपी (हेडगियर)

## परिधान

### चेहरे पर प्रयुक्त विविध रंग अलग-अलग मानसिक स्थिति के परिचायक

हरा:  
कुलीनता

काला:  
दुष्टता

लाल धब्बे:  
राजसी गौरव  
तथा बुराई का  
संयोजन

पीला:  
संत और  
महिलाएँ

सफेद दाढ़ी:  
उच्चतर चेतना  
तथा देवत्व

हाथों के  
हाव-भाव,  
चेहरे की  
अभिव्यक्ति  
तथा आँखों  
की हरकतें  
महत्त्वपूर्ण हैं।

## वाद्ययंत्र

- ❖ ढोल
- ❖ छेंद
- ❖ महला



- ❖ गुरु कुंचू कुरुप, गोपी नाथ, कोट्टकल शिवरमन तथा रीता गांगुली आदि।

## प्रसिद्ध प्रवर्तक



[और पढ़ें...](#)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/kathakali-kerala-1>

